

बाईंद ज्युज निट

“खबरों से समझौता नहीं”



पटना, वर्ष: 6, अंक: 274, मंगलवार, 14 अक्टूबर 2025 मूल्य: 5:00, पृष्ठ: 8 9471060219, 9470050309 www.bordernewsmirror@gmail.com

रामगढ़ा में स्मैक तस्करी का भंडाफोड़, तीन गिरफ्तार

03

विहार विधानसभा चुनाव : पोस्टल बैलट व ईटीपीबीएस कोषांगों की गयी...

04

दिलबर की अँखों सांग पर परफॉर्म करना बेहद रोमांचक अनुभव रहा नोरा फतेही ...

07

गाजा शांति समझौता पश्चिम एशिया के लिए एक ऐतिहासिक सुवह : ट्रंप

हमासने सभी बंधकों को किया रिहा, इजरायल के शक्तिशाली बनने से शांति स्थापित हुई

तेल अवीव (एजेंसी)। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने समाचार को इसाइली संसद (नेसेट) को संवेदित किया। उन्होंने इस बात को दीहारा कि उन्होंने आठ महीने में आठ संघर्षों को खस्त करवाया। ट्रंप ने यह भी कहा कि गाजा शांति समझौता पश्चिम एशिया के लिए एक नई सुवह है। इजरायल के शक्तिशाली होने के कारण यह शांति बहाल हुई।

यह सम्मान पाने वाले पहले ऐर इसाइली नामिक है। इसके साथ ही पीस मेन्टेनाव ने डोनाल्ड ट्रंप के शांति प्रयासों की सरहाव है। इसके बाद गाजा प्रधान डोनाल्ड ट्रंप ने

पास वापस लौट रहे हैं। ट्रंप ने दोहराया, हमने आठ महीनों में आठ युद्ध निपटाए हैं, जिनमें यह भी शामिल है। ट्रंप ने कहा, अगर हम यह में उत्तरते हैं, तो हम इसे ऐसे जीतते हैं, जैसा पहले कभी किसी ने नहीं जीता।



• अमेरिकी राष्ट्रपति ने अरब और इस्लामी देशों की तरीफ की- अमेरिकी राष्ट्रपति ने गजा में शांति योजना के लिए अरब और इस्लामी देशों की तरीफ की और कहा कि उन्होंने एक जु़ू़त करकर हमास पर दबाव डाला और बंधकों को रिहा करने में मदद की। उन्होंने कहा, हमें बहुत मदद मिली। ऐसे कई लोग हैं, जिनके बारे में आपने सोचा था नहीं होगा। और मैं उनका बहुत करता हूँ। उन्होंने कहा, यह इसाइल और पुरी दुनिया के लिए एक अद्भुत कामयाबी है कि इन देशों ने शांति के साझेदार के रूप में मिलकर काम किया। उन्होंने आगे कहा, अब आने वाली पीरियट इस क्षण को ऐसे याद रखेंगे, जब सब कुछ बदलना शुल्ह हो गया और बहुत ज्यादा बदलाव बहतरी के लिए हुआ। यह केवल एक जंग का अंत नहीं है।

बेटा एनकाउंटर में देर, पिता बोले- मैं बहुत खुश हूँ

लावारिस ने दफना दी; मेटर में शहजाद

ने 7 साल की बच्ची से गैंगरेप किया था

मेटर (एजेंसी)। मेटर पुलिस ने सोमवार सुबह मुठभेड़ में गैंगरेप के आरोपी को मार गिराया। मुठभेड़ सुरक्षा थाना क्षेत्र के जंगलों के पास हुई। पुलिस सभी विवादों देख बदमाश ने फायरिंग कर दी। तुरिया ने भी जवाही काफियत की। गोली लगन से 25 हजार का इनामी शहजाद उर्फ निकी (34) देर हो गया। उसके सीने में गोली लाई शहजाद के पिता रही सहजान और मां नरसीमा ने बेटे की डेंडवाई लेने से इकाई कर दिया है। दोनों ने कहा- हमें ऐसे दीर्घे बेटे से काई मतलब नहीं है। उससे हमने 15 साल पहले ही रिस्ते खत्म कर दिए थे, मेरे तिर वो 15 साल पहले ही मर चुका था। उसे पुलिस से उसी सही सजा दी है। पुलिस ही लावारिस में उसे दफना दे।

बांदा ने ट्रैटर-बाइक की टक्कर, तीन की गैत बांदा (एजेंसी)। बांदा में तेज रातार ट्रैटर-ट्रॉली से बाइक की टक्कर हो गई। रविवार रात हुए इस बांदों में एक ही बाइक पर सवार चाहा- भीजे समेत 3 लोगों की मौत हो गई।

बांदा ने ट्रैटर-बाइक की टक्कर, तीन की गैत

बांदा (एजेंसी)। बांदा में तेज रातार ट्रैटर-ट्रॉली से बाइक की टक्कर हो गई। रविवार रात हुए इस बांदों में एक ही बाइक पर सवार चाहा- भीजे समेत 3 लोगों की मौत हो गई।

जोएल मोकिर, फिलिप अधियन व पीटर हॉविट को अर्थशास्त्र का नोबेल

रटॉकहोम (एजेंसी)। इस लाइकोनोमिक्स का नोबेल

पीटर हॉविट (एजेंसी) और फिलिप अधियन (युके) को मिला है। नोबेल समिति ने बायाया कि इन अर्थशास्त्रियों ने बताया कि इनोवेशन से कैसे आर्थिक विकास का रासा खुलता है।

जोएल मोकिर, फिलिप अधियन व पीटर हॉविट को अर्थशास्त्र का नोबेल

रटॉकहोम (एजेंसी)। इस लाइकोनोमिक्स का नोबेल

पीटर हॉविट (एजेंसी) और फिलिप अधियन (युके) को मिला है। नोबेल समिति ने बायाया कि इन अर्थशास्त्रियों ने बताया कि इनोवेशन से कैसे आर्थिक विकास का रासा खुलता है।

जोएल मोकिर, फिलिप अधियन व पीटर हॉविट को अर्थशास्त्र का नोबेल

रटॉकहोम (एजेंसी)। इस लाइकोनोमिक्स का नोबेल

पीटर हॉविट (एजेंसी) और फिलिप अधियन (युके) को मिला है। नोबेल समिति ने बायाया कि इन अर्थशास्त्रियों ने बताया कि इनोवेशन से कैसे आर्थिक विकास का रासा खुलता है।

जोएल मोकिर, फिलिप अधियन व पीटर हॉविट को अर्थशास्त्र का नोबेल

रटॉकहोम (एजेंसी)। इस लाइकोनोमिक्स का नोबेल

पीटर हॉविट (एजेंसी) और फिलिप अधियन (युके) को मिला है। नोबेल समिति ने बायाया कि इन अर्थशास्त्रियों ने बताया कि इनोवेशन से कैसे आर्थिक विकास का रासा खुलता है।

जोएल मोकिर, फिलिप अधियन व पीटर हॉविट को अर्थशास्त्र का नोबेल

रटॉकहोम (एजेंसी)। इस लाइकोनोमिक्स का नोबेल

पीटर हॉविट (एजेंसी) और फिलिप अधियन (युके) को मिला है। नोबेल समिति ने बायाया कि इन अर्थशास्त्रियों ने बताया कि इनोवेशन से कैसे आर्थिक विकास का रासा खुलता है।

जोएल मोकिर, फिलिप अधियन व पीटर हॉविट को अर्थशास्त्र का नोबेल

रटॉकहोम (एजेंसी)। इस लाइकोनोमिक्स का नोबेल

पीटर हॉविट (एजेंसी) और फिलिप अधियन (युके) को मिला है। नोबेल समिति ने बायाया कि इन अर्थशास्त्रियों ने बताया कि इनोवेशन से कैसे आर्थिक विकास का रासा खुलता है।

जोएल मोकिर, फिलिप अधियन व पीटर हॉविट को अर्थशास्त्र का नोबेल

रटॉकहोम (एजेंसी)। इस लाइकोनोमिक्स का नोबेल

पीटर हॉविट (एजेंसी) और फिलिप अधियन (युके) को मिला है। नोबेल समिति ने बायाया कि इन अर्थशास्त्रियों ने बताया कि इनोवेशन से कैसे आर्थिक विकास का रासा खुलता है।

जोएल मोकिर, फिलिप अधियन व पीटर हॉविट को अर्थशास्त्र का नोबेल

रटॉकहोम (एजेंसी)। इस लाइकोनोमिक्स का नोबेल

पीटर हॉविट (एजेंसी) और फिलिप अधियन (युके) को मिला है। नोबेल समिति ने बायाया कि इन अर्थशास्त्रियों ने बताया कि इनोवेशन से कैसे आर्थिक विकास का रासा खुलता है।

जोएल मोकिर, फिलिप अधियन व पीटर हॉविट को अर्थशास्त्र का नोबेल

रटॉकहोम (एजेंसी)। इस लाइकोनोमिक्स का नोबेल

पीटर हॉविट (एजेंसी) और फिलिप अधियन (युके) को मिला है। नोबेल समिति ने बायाया कि इन अर्थशास्त्रियों ने बताया कि इनोवेशन से कैसे आर्थिक विकास का रासा खुलता है।

जोएल मोकिर, फिलिप अधियन व पीटर हॉविट को अर्थशास्त्र का नोबेल

रटॉकहोम (एजेंसी)। इस लाइकोनोमिक्स का नोबेल

पीटर हॉविट (एजेंसी) और फिलिप अधियन (युके) को मिला है। नोबेल समिति ने बायाया कि इन अर्थशास्त्रियों ने बताया कि इनोवेशन से कैसे आर्थिक विकास का रासा खुलता है।

जोएल मोकिर, फिलिप अधियन व पीटर हॉविट को अर्थशास्त्र का नोबेल

रटॉकहोम (एजेंसी)। इस लाइकोनोमिक्स का नोबेल

पीटर हॉविट (एजेंसी) और फिलिप अधियन (युके) को मिला है। नोबेल समिति ने बायाया कि इन अर्थशास्त्रियों ने बताया कि इनोवेशन से कैसे आर्थिक विकास का रासा खुलता है।

जोएल मोकिर, फिलिप अधियन व पीटर हॉविट को अर्थशास्त्र का नोबेल

रटॉकहोम (एजेंसी)। इस लाइकोनोमिक्स का नोबेल

पीटर हॉविट (एजेंसी) और फिलिप अधियन (युके) को मिला है। नोबेल समिति ने बायाया कि इन अर्थशास्त्रियों ने बताया कि इनोवेशन से कैसे आर्थिक विकास का रासा खुलता है।

जोएल मोकिर, फिल

आखिर तक पर्दादारी!

सवाल नहीं उठते, अगर निर्वाचन आयोग ने सुप्रीम कोर्ट के पूर्व आदेश की भावना के अनुरूप जारी मतदाता सूची में नाम जोड़ने या काटने की वजह भी बता दी होती। मगर आयोग ने यह नहीं किया, तो बात फिर अदालत पहुंची। बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के क्रम में निर्वाचन आयोग ने ऐसी हर कोशिश की है, जिससे लोग उसके इरादे पर शक करें। उसने हर कदम पर पारदर्शिता से परहेज किया। उनमें से कई कोशिशें नाकाम हुईं, तो उसका पूरा श्रेय सर्वोच्च न्यायालय और जागरूक नागरिकों को दिया जाएगा। पहले की सुनवाइयों में सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट कर दिया था कि मतदाता सूची से जिन लोगों के नाम हटाए या जिनके जोड़े गए, उनके बारे में निर्वाचन आयोग पूरी सूचना सार्वजनिक करे। कोर्ट के सख्त रूख के बाद आयोग ने नाम काटने की वजह बताते हुए 66 लाख से अधिक उन लोगों की लिस्ट जारी की, जिनके नाम नई अंतरिम सूची में नहीं थे। अंतरिम सूची पर दावा और आपत्ति की अवधि पूरी होने के बाद आयोग ने अंतिम सूची जारी की, तो सामने आया कि तीन लाख 66 ऐसे नाम गायब हो गए हैं, जो अंतरिम सूची में थे। इसके अलावा साढ़े 21 लाख नए नाम शामिल किए गए। यह सवाल जायज है कि एसआईआर के दरम्यान उपरोक्त 3.66 लाख नाम सूची में रखने लायक समझे गए थे, तो बाद में उन्हें क्यों काटा गया? और इतनी बड़ी संख्या में नए नाम कहां से आ गए? ये सवाल नहीं उठते, अगर आयोग ने सुप्रीम कोर्ट के पूर्व आदेश की भावना के अनुरूप जारी सूची में नाम जोड़ने या काटने की वजह भी एक कॉलम में बता दी होती। मगर आयोग ने फिर डंडी मारने की कोशिश की, तो बात फिर अदालत पहुंची। अब सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि अंतिम सूची से भ्रम पैदा हुआ है। उसने नए काटे या जोड़े गए नामों की पहचान बताने का निर्देश आयोग को दिया है। तो अब शायद आयोग उन नामों की पहचान के साथ-साथ उन्हें मतदाता सूची में जोड़ने या काटने के कारण बताएगा। लेकिन इस बीच एसआईआर की प्रक्रिया और आयोग के तौर-तरीकों को लेकर समाज के एक हिस्से में नए सिरे से संदेह पैदा हो चुके हैं। इससे चुनाव प्रक्रिया पर आंच आ सकती है। बेहिचक कहा जा सकता है कि इसके लिए पूरी तरह निर्वाचन आयोग जिम्मेदार है।

किसी भी संस्थान में ईमानदारी जरुरी है

संजय गोस्वामी

यदि हम किसी संस्थान में काम नहीं रते हैं तो इमानदारी जरूरी है आज मैं अपने बारे में नहीं संस्थान के बारे में सोचना चाहिए किंतु भी जो को तोड़ना आसान होता है तोड़ना मुश्किल इसी तरह की एक टना मेरे आँखों के सामने घटी जो हाद दुर्भाग्यपूर्ण है बात करता हूँ एक स्थान जो चैटीबल संस्था थी उसमें हले सरकार से हिंदी में विज्ञान के चार हेतु अच्छा फंड मिलता था जो बाब बन्द होने के कागार पर है ऐसे तो रकारी संस्था विज्ञान प्रसार तो बन्द हो गई लेकिन हिंदी विज्ञान साहित्य विशेषज्ञ अभी जिन्दा है लेकिन हैंगांग वावस्था में है इसमें दो गुट बन गए एक दुर्भाग्यपूर्ण है दरअसल 2021 में योगोना का संकट आया और परिषद साथ एक लोकल इंजीनियरिंग ऑलेज की संस्था विवेकानंद मैर्सेन्ट ऑलेज, चेम्बर से एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजन होना था जो बन्द हो गया लेकिन उसकी पुरी तैयारी कर ली गई बाद में सचिव ने कोषाध्यक्ष से क्रोहंड कल ले लिया और खर्ज कर देने का बाबा किया और जो बैग आनेवाला था वो आ गया ऐसा बताया गया लेकिन कोषाध्यक्ष ने बाद में बैग को छोड़ने की इच्छा जताई लेकिन यह दहकर की बैग को डिस्पोजल कर दिया इसपर कोषाध्यक्ष को पैसा गमन नहीं रने का आरोप लगाया और दोनों में कोफी खींचातानी हुई हालांकि उनका बैग में प्रति एक जगह काम करने काफी नरम रहा लेकिन उन्होंने इस तु अॉनलाइन आमसभा बुलाई और उसमें अधिकतर लोगों ने यह मान दिया की बैग डिस्पोजल हो गया उधर होंगे अगले चुनाव में लेकिन लोगों ने समझाया भारी बहुत साल तक आप परिषद में हैं अतः आप खुशी खुशी निकल जाए और दूसरों को मौका दें दरअसल परिषद में लोगों को आने जाने और बड़े बड़े लोगों के साथ बैठने में दिलचस्पी हुई और अब ऐसी स्थिति आई कि एक पद के लिए दों ब्या दो से अधिक उम्मीदवार ने नामांकन भरा और बाद में आप सभा में 2016 में पहली बार चुनाव हुए और उस चुनाव में एक कोषाध्यक्ष थे जो तीन टर्म तक थे एक सचिव के लिए जो खड़े थे उन्होंने उसकी भरी सभा में बैडजती की कहा आप 2वा तीन टर्म तक रहे हैं अतः आप उसी पद के लिए नहीं खड़ा हो लेकिन उन्होंने नहीं सुना, और चुनाव अधिकारी ने भी देखते हुए कहा आप तीन बार खड़ा हों चूके हैं अतः आप नहीं हो सकते लेकिन चुनाव अधिकारी के साथ मुझे आमसभा ने मदद करने को कहा उस समय मैंने चुपके से कहा की चुनाव अधिकारी जी कहने से नहीं होता सबूत के आधार पर फैसला होता है तभी उन्होंने अपनी कुर्सी का महत्व समझते हुए उन्होंने उनसे सबूत माँगा और अचानक सबूत जुटाना मुश्किल था क्योंकि उसे कहाँ पता था कि इतनी जलदी कोई सबूत भी मांग लेंगे और आमसभा ने चुनाव अधिकारी के फैसला को सही मानते हुए उसे चुनाव में खड़ा होने की अनुमति दि बाद में मुझे लगा उनकी संछाल बल कमज़ोर है क्योंकि जो सचिव के लिए खड़ा होने वाले थे वो उस उम्मीदवार का समर्थन कर दिया जिसने उनके खिलाफ कोषाध्यक्ष के खड़ा होने पर सवाल उठा दिए थे और

फिर जैसे तैसे लास्ट मिनट में एक मित्र आया और उनके पक्ष में बोट कर दिया और मैं हाँ गया टाई अब वहाँ अध्यक्ष को निर्णय लेना था वो किसे चुनता है बाद में अध्यक्ष ने कोषाध्यक्ष को अपना समर्थन दिया और पुनः कोषाध्यक्ष बने लेकिन जिसने आम सभा में उसके खिलाफ खुब गरजा था सचिव के लिए चुना गया और परिषद में दो फाँट हो गए और कार्यकाल कुल मिलाकर बहुत कष्टदायक रहा क्योंकि जहाँ कलह होती है समझ ले उसका पतन होना तय है बाद में रायपुर में परिषद द्वारा एक संघोषी का आयोजन हुआ तो उनका नाम ही उडा दिया तब उनको गुस्सा आया और चुनाव की तैयारी में जुट गए बाद में जब अध्यक्ष और कोषाध्यक्ष में बबाल हुआ तो किसी के बदले उहें जाने का मौका मिला मुझे भी पृछा गया लेकिन अपनी इजाजत को समझते हुए हमने नाम वापस ले लिया क्योंकि कुछ दिन पहले ही एक वैज्ञानिक पत्रिका को लेकर व्यवस्थापक का नाम नहीं से सचिव ने डिस्पैच करने से रोक दिया फिर एक महानुभाव जो व्यवस्थापक भी थे संपादक में भी नाम जुड़वा लिया और जबकी नया व्यवस्थापक की नियुक्ति हुई थी बाद में दोनों में क्या बात हुआ मैंने व्यवस्थापक मंडल के सदस्य होने के नाते डिस्पैच की अनुमति मांगी क्योंकि वेंडर बहुत दिनों तक घर पर नहीं रख सकता था अतः हमने डिस्पैच को लेकर व्यवस्थापक से किलयर करा लिया यह बात उस समय के सचिव महोदय नाम लेना ठीक नहीं है उनको इतना खराब लगा कि उन्होंने हरामी शब्द का प्रयोग कर दिया तब मैंने इस्तीफा की पेशकश की और अध्यक्ष ने कहा हमने खब डांटा सही कहा या

उस समय के सचिव अपने लोगों से हट कर सेवानिवृत्त होने के बाद भी अध्यक्ष पद के लिए खड़ा हुए कोरोना को देखते हुए चुनाव पर रोक का नोटिफिकेशन आया लेकिन चुनाव अधिकारी उसके खास थे उन्होंने कुछ भी नहीं सुना और सारे नियम क्रान्ति को हाथ में लेते हुए अध्यक्ष पद हेतु जो उम्मीदवार उसके खिलाफ खड़ा था उसका बांधपास सर्जी होना था मैं ही पहला बन्दा था कि रोकने के लिए कहा क्योंकि ऐ संदर्भ भी मुझे गुरुजी ही ने दिए थे क्योंकि मानवता से बड़ा क्रोई धर्म नहीं होता अतः अस्पताल में एक तरफ ऑपरेशन में जिंदगी और मौत से क्रोई जूझ रहा हो और उसे पल पल की खबर मिल रही थी उसके दिल पर क्या गुरुजी होगी वह वही जनना होगा लेकिन बीमारी का फायदा उठाकर उसने जो वैलेट पेपर बनाए थे उसे बाहर ही रखा जो नियमानुसार वह उसका मत पत्र होता है उसे पता नहीं किसने बाहर रखने की अकल दि जिसने व्हाट्सप्प को एक अश्लील पोस्ट करना चालू रखा और लोगों पर खुद ही अमर्यादित होने का हकीकत भी दिखा दि चुनाव में कोविड नियम को जानने हुए और डिपार्टमेंट द्वारा रोक के बाबजूद नहीं माना और चुनाव भी बीमार उम्मीदवार की गैर हजारी में हुआ अतः डिपार्टमेंट ने मान्यता नहीं दि क्योंकि वह चैयररीटी कमीशनर के दायरे में आता है और फिर डिपार्टमेंट ने इससे किनारा कर लिया और जो सचिव ने त्यागपत्र इमेल से दिए थे उन्होंने बड़ी चालाकी से हैंडओवर मीटिंग बुला लीं मुझे भी वहाँ जाने का खुब प्रलोभन मिला लेकिन मेरे गुरुजी ने मुझे बिल्कुल मना कर दिए और जब मैं टस से मस नहीं हुआ तो उसने मेरे बालकोनी में बैग रखने का आरोप लगा दिया और मैं खुब खुलकर लिखा तब गलती का अहसास हुआ और माफी मांगी उसके बाद परिषद में सभी अपना अपना पोस्ट पकड़ लिए और मेरे गाड़ी में प्रशंसन मंच का एक पूरा अटैची मेरे गाड़ी में पड़ा रहा बाद मैं अनाधिकृत तरीके से छल से मिशनारी को यह बताया कि मैं खड़ा हो रहा हूँ आप मत खड़ा हो क्योंकि उसे भी उसकी ताकत का अंदाज था और इस्तरह वह बिना चुनाव को चुन लिए गए लेकिन प्रस यह है कि किसने चुना चुनाव अधिकारी सिर्फ चुनाव के लिए मान्य होता है ना कि बिना बोट बाले उम्मीदवार को चुन सकता है यह अधिकार बोट आप सभा को है जो बुलाया ही नहीं गया इस्तरह परिषद का सत्यानाश हो गया क्योंकि उसके बाद जो उनके विरोध में कमिटी बनी क्रोई खास काम नहीं किआ हाँ इतना जरूर किया खाता सील हो गया अब, 3 साल बाद फिर नई कार्यकारिणी के लिए मुश्किल से एक गुप बना लेकिन क्रोई खास प्रगति देखने को नहीं मिल रही थी अतः अब सिर्फ व्हाट्सप्प चल रहा है क्रोई खोल कर देखता भी नहीं है क्योंकि खाता फ्रीज होने के बाद कौन अपनी जब से पैसा लगाएगा अतः सभी हिंदी प्रेमियों इसका साथ दें अतः संस्थान में अब जरूरी हो गया कार्यक्रम को जारी रखना इसके लिए सभी हिंदी विज्ञान प्रेमी को एक मंच पर आना होगा इसकी प्रतिक्रिया वैज्ञानिक होशेशा निकल रही है लेकिन मानदेय ना मिलने के कारण अच्छे लेख नहीं मिल पा रही है और अब इसे प्रिंट कर लगाभग सभी विज्ञान संस्थान को भेजना भी जरूरी हैं प्रतिक्रिया में प्रकाशित लेखों में ना ही लेखकों के साथ क्रोई भेटभाव होता है।

क्या ट्रंप नोबेल में मात के बाद भी शांति दूत बने रहेंगे?

ऋगुप्त दत्त

हैं। वो भारत-पाकिस्तान, रूस-यूक्रेन, इजरायल-हमास जंग समेत आठ युद्धविराम या समझौते कराने का दावा करते हैं। जबकि दुनिया हकीकत जानती है कि इन सभी जगहों पर अभी कितनी शांति है? इस बार का नोबेल शांति पुरस्कार नॉर्वेन्यन नोबेल कमेटी ने वेनेजुएला की विपक्षी नेता मारिया कोरिना मचाडो को देना तय किया। नोबेल समिति के अध्यक्ष यार्गन वाटने फ़िडनेस ने मारिया कोरिना मचाडो को एक ऐसी प्रमुख और एकजुट करने वाली शख्सियत बताया जिहोंने पहले गहरे विभाजित विषय को एकजुट किया फिर स्वतंत्र चुनावों और प्रतिनिधि सरकार की मांग में समान आधार स्थापित करने का कठिन काम किया। अपने प्रयासों की कामियाबी के लिए मारिया कोरिना मचाडो को छिपकर रहने पर भी मजबूर होना पड़ा। लेकिन जान को गंभीर खतरों के बावजूद उन्होंने अपना देश नहीं छोड़ और दुनिया भर में शांति के पक्षधर लाखों लोगों का प्रेरित किया। मारिया का मानना है कि जब सत्तावादी लोग सत्ता हथिया लेते हैं, तो स्वतंत्रता के ऐसे साहसी रक्षकों को पहचाना जरूरी है जो उठ खड़े हों और विरोध करें। लोकतंत्र उन्हीं लोगों पर निर्भर करता है जो चुप रहने के बजाए गंभीर जेखिमों के बावजूद आग बढ़ाते रहने का दुसाहस करते हैं। यह याद दिलाता है कि स्वतंत्रता को कभी भी हल्के में नहीं लेना चाहिए, बल्कि हमेशा उसकी रक्षा करनी चाहिए। इसके लिए दृढ़ इच्छा शक्ति और शब्दों के



सामर्थ्य का इस्तेमाल जरूरी है। ट्रम्प भले ही दुनिया का दारोगा कहलाएं लेकिन उन्हें मारिया के सिध्दांतों और धारणाओं से काफी कुछ सीखने की जरूरत है। यह सही है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प अपने दूसरे कार्यकाल में तो शुरुआत से ही शांति के नोबेल पुरस्कार का सपना संजोए बैठे थे। उनका हर मंच पर दावा कि उन्होंने ही आठ युद्ध रुकवाए हैं यही बताता है। पूर्व राष्ट्रपति ओबामा की आलोचना करना और कहना कि बिना किसी कारण के उह्वें नोबेल मिला मैंने तो ४-४ युद्ध रुकवाए अहंकार नहीं तो क्या है? लेकिन वो भूल गए कि उनके दावे नोबेल शांति पुरस्कार के नामांकन की समय-सीमा के बाद के हैं। ऐसे में संभव है कि यह उनकी चालाकी हो और अगले साल के अपने दावे को पुँजा करने की रणनीति हो। दुनिया जानती है कि ट्रम्प कहते कुछ हैं, करते कुछ हैं। कहा तो यह तक जाने लगा है कि ट्रम्प को यह भी नहीं पता

अगले पल वो क्या कर बैठे, बहरहाल यह उनका अपना मामला है जो जाने। हाँ, नोबेल कमेटी की निना ग्रेगर ने यह जरूर कहा कि नोबेल के फैसले पर गाजा सीजफायर का असर नहीं होगा, लेकिन अगर यह शांति स्थायी रही, तो अगले साल ट्रंप की दावेदारी मजबूत हो सकती है। वहीं, नोबेल कमेटी के अध्यक्ष जोरपूर्ण बाटने फ्राइडेनेस ने कहा कि पुस्कार पर फैसला काम के आधार पर किया जाता है। अब ऐसा भी नहीं है कि अमेरिका जैसे देश सशक्त देश के राष्ट्रपति को इतना भी भान न हो? अब एक पुराना और चौंकाने वाला वाकया सुरिखियों में है। जब एडॉल्फ हिटलर को शांति पुस्कार के लिए नामांकित करने की कोशिश हुई। इससे हर कोई असहज हुआ होगा। उनके क्रूर होने के किस्से-कहानियां इतिहास की किताबों में दर्ज हैं। क्या उनका नाम कभी प्रस्तावित हुआ? दरअसल एक तीखी व्यंग्यात्मक आलोचना के रूप में जरूर उनका प्रस्ताव स्वीडिश संसद के एक सदस्य, एरिक ब्रांट ने 27 जनवरी 1939 को नोबेल समिति को भेजा। ब्रांट एक समाजिक-लोकतात्त्विक राजनेता थे। यह उनका स्वीडिश राजनीतिज्ञों की प्रवृत्ति पर कटाक्ष और व्यंग था जो तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री नेविल चेष्टरलेन की शांति-नीति की तरीक करते नहीं अधारते थे। जब चेष्टरलेन की शांति के लिए खूब स्तुति हो सकती है, तो हिटलर को भी यूरोप में युद्ध के खतरों लिए नामांकित कर दीजिए। लेकिन सार्वजनिक प्रतिक्रियाओं,

आलोचनाओं और गलतफहमियों से घिरते देख ब्रांट ने अपना नामांकन औपचारिक रूप से वापस भी ले लिया। नोबेल पुरस्कार का स्थापना बिजनेसमैन, एंटरप्रेनोर्स और ऐवेज़ानिक अल्फ्रेड नोबेल की मृत्यु के बाद हुई जिन्होंने अपनी ज्यादातर संपर्क कई क्षेत्रों में पुरस्कारों के लिए छोड़ी थी। सन 1895 में अपनी वसीयत में कहा था कि ऐसे पुरस्कार उन्हें दिया जाना चाहिए जिन्होंने पिछले सात मानव जाति के लिए सबसे बड़ा उपकार किया हो। शुरूआत 1901 में हुई जो जाति है। केवल प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 1914 से 1918 तक और द्वितीय विश्व युद्ध वे दौरान 1939 से 1945 में यह नहीं दिया गए। पुरस्कार भौतिकी, रसायन विज्ञान चिकित्सा या शरीर क्रिया विज्ञान, साहित्य शांति और आर्थिक विज्ञान क्षेत्र में दिए जाते हैं। शांति पुरस्कार ऐसा अकेला है जिसका फैसला नॉर्वे की संसद की तरफ से चुने गए पांच सदस्यों की एक समिति की करती है समिति ओस्लो में है पुरस्कार वहीं देते हैं इसमें एक डिप्लोमा, सोने का मेडल और 11 मिलियन स्वीडिश मुद्रा (10.36 करोड़ रुपये) दी जाती है। नियमानुसार पुरस्कार देने और न देने की बजह अगले 50 साल तक नहीं बताई जाती है। काश ट्रूप इतने इंतजार कर पाते? फिलहाल यह देखना होगा कि तिलमिलाए ट्रूप आगे भी शांति दूत बन रहेंगे या दुनिया की शांति हरेंगे, क्योंकि उनका खीझा, खिसियाहट, टैरिफ वार और बॉडी लैंग्वेज कुछ और ही इशारा कर रही है?

बिहार: 'वोट खरीद' की विट्टपता के भरोसे एनडीए!

सत्येन्द्र रंजन

प्रशंसात किशोर कर रहे हैं। किशोर ने एनडीए नेताओं सम्प्राट चौधरी, अशोक चौधरी, दिलीप जायसवाल आदि पर गंभीर इल्जामों की झड़ी लगा रखी है। इससे ना सिर्फ एनडीए को कठघरे में खड़ा दिखा है, बल्कि इस कारण सत्ताधारी गठबंधन की अंदरूनी दरारें भी सामने आई हैं। परिणाम यह हुआ है कि भाजपा-जनता दल (यू)-एलजेपी-हिंदुस्तानी आवाम पार्टी का गठबंधन अब पूरी तरह 'वोट खरीद' और सांप्रदायिक ध्वनीकरण पर निर्भर हो गया है। सांप्रदायिक ध्वनीकरण भाजपा की चुनावी रणनीति में मौजूद स्थायी तत्व है। पार्टी नेता कभी इसे पृष्ठभूमि में रखते हैं, तो कभी जरूरत के हिसाब से उसे उग्र रूप देते हैं। कई राज्यों में सिर्फ यही तत्व भाजपा को चुनाव जिताने में कागर रहता आया है। मगर बिहार में अभी तक इसके निर्णायक होने का भरोसा शायद भाजपा नेतृत्व को नहीं है। इसीलिए नीतीश कुमार के मुखौटे की जरूरत उसे अभी भी है। नीतीश ढलान के दौर में है। बार-बार पाला बदलने से उनकी पुरानी छवि नष्ट हो चुकी है। सुशासन का नकाब उत्तर चुका है। उनकी सेहत को लेकर तमाम तरह की चर्चाएँ हैं।

उन्हें मुखौटा बनाए गए हैं, तो उसकी वजह से वे पर्याप्त नेताओं का नहीं है। नीतीश कुमार ने उसकी चुनावी भरपाई थाथ से सरकारी पैसा ने की कोशिश की थी दूर करोड़ परिवर्तनों में खाते में दस हजार लर, लाखों युवाओं को हर महीने एक हजार गारी भत्ता, बुद्धावस्था प्रशंसन में भारी बढ़ोतरी, भर्तों में इजाफा, राज्य कर्मचारियों के लिए की नई किस्त आदि आयाएं हैं, जिन्हें सीधे 'खरीद' योजना की जा सकता है। भारत जना का आम चलन है। सरकार इसे एक नई विद्युपता तक ले गई विनंदेभर्भ में ऐसी योजनाएं नहीं हैं। वैसे तो इनका भी था, लेकिन केंद्रीय वित्त विभाग के बाद नंदेंद मोदी नीतिगत रूप दिया, है। मोदी सरकार आर्थिक सलाहकार एवं नेता ने इसे 'कल्याण

है। हालांकि किशोर अपनी पार्टी की अरबिंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी से तुलना पसंद नहीं करते, मगर उनकी ध्वनियां और कार्यसूची काफी कुछ केजरीवाल से मेल खाती हैं। मीडिया इंटरव्यूज में किशोर ने कहा है कि आंदोलन और क्रांति में उनका भरोसा नहीं है, इसलिए अन्ना आंदोलन की कोख से निकली आम आदमी पार्टी से जन सुराज की तुलना नहीं की जानी चाहिए। मगर दो बातें इन प्रयोगों को एक जगह खड़ी करती हैं: आम आदमी पार्टी के अराधिक दिनों में योगेंद्र यादव जैसे इसके सिद्धांतकार यह खुलेआम कहते थे कि इस नई पार्टी की कोई विचारधारा नहीं है—यह समाधान उन्मुख पार्टी है। पार्टी विचारधारा में बिना बधे लोगों की समस्याओं का समाधान निकालना चाहती है। दिल्ली में दस वर्ष के शासनकाल में आम आदमी पार्टी ने बिजली, पानी शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था के क्षेत्र में लोक-लुभावन पहल को अपनी खास पहचान बनाने की कोशिश की। ? जन सुराज ने अपना मुख्य एजेंडा बिहार में स्कूली शिक्षा व्यवस्था को दुरुस्त करना और पलायन रोकना बताया है। पार्टी का दावा है कि यहीं बिहार की मुख्य समस्याएं समाधान वह पेश करेगी भी किसी खास विचारधारा नहीं करती। इस रूप में भी खुद को समाधान ही मानती है। ? जन सुराज पर महात्मा गांधी और अंबेडकर की तस्वीरों हैं। पंजाब में कामयाब तक आम आदमी पार्टी दो तस्वीरों का सहाय पंजाब में उसने गांधी भगत सिंह की तस्वीर एक अन्य समानाता के प्रशंसांत किशोर की अपील है। दोनों सुविधा-संपर्क समूह से आए हैं। उन्हें डिस्कोर्स मध्य वर्ग से रहे हैं। ? अन्ना आंदोलन केजरीवाल ने दिल्ली सियासी जमीन तैयार किशोर ने बिहार की पदयात्राओं के जमीन बनाने की कोशिश केजरीवाल ने पुराने दलों को एक जैसा में मिले हुए हैं) बताया दाव लगाने के लिए को उत्प्रेरित किया। सफल रहे।

हैं, जिसका। जन सुराज धारा की बात संभवतः वह उन्मुख पार्टी राज के बैनरों पर भीम राव नजर आती होने से पहले ने भी इन्हीं लिया था। जी की जगह को दे दी।? जरीवाल और पृष्ठभूमियां और पेशवर दोनों के बीच रंग लिए जान के जरिए वे में अपनी भाव की थी। वर में दो साल जरिए अपनी शेष की है। राजनीतिक सब आपस कर खुद पर मतदाताओं वाले। इसमें वे से लोग प्रभावित होंगे और आपका अनुसरण करेंगे। आप जिम्मेदारियों को बखूबी निभाएंगे। बातचीत के दौरान अपनी निजी बातें शेयर न करें। जिस काम की शुरुआत करेंगे, वह समय पर पूरा होगा। कर्ट से संबंधित कोई मामला चल रहा है तो उसके सुलझने की पूरी उम्मीद है।

बृश्चिक राशि: आज आपका दिन खुशहाल रहेगा। मित्रों से मन की बात शेयर करने से सुकून मिलेगा। आपको नई जानकारियां भी हासिल होंगी। रिश्तेदार से शुभ संदेश मिलेगा, जिससे खुशी दोगुनी होगी। बिजनेस में खास एरीमेंट होगा, लेकिन कॉफ्टवेयर के दौर में कार्य करने के तरीकों में बदलाव जरूरी है। कार्यक्षेत्र में सहकर्मी और सीनियर आपके काम से खुश रहेंगे और तारीफ करेंगे। सभी जरूरी काम आसानी से पूरे होंगे।

धनु राशि: आज आपका दिन सामान्य रहेगा। निजी कामों पर बाहरी लोगों का दखल न होने दें। भावनाओं में आकर कोई फैसला न लें। ज्यादा काम के कारण थकान हो सकती है छोटी-छोटी परेशानियां जल्द दूर होंगी। परिवार में सुखद माहौल रहेगा। व्यापार में मिली जिम्मेदारियों को सफलता से निभाएंगे।

मकर राशि: आज आपका दिन बढ़िया रहेगा। साम का समय माता-पिता के साथ महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श करेंगे, जिससे अच्छा समाधान मिलेगा। किसी काम की शुरुआत करने से पहले शुभ मुहूर्त देखना बेहतर होगा। समाज में किये गए कार्यों से मान-सम्मान बढ़ेगा। कोई विश्व पूरी होगी जिससे खुशी मिलेगी।

कुम्भ राशि: आज का दिन परिवार के लिए नई खुशियां लेकर आया है। किसी अनुभवी से मिली सलाह फायदेमंद साबित होगी। काम को लेकर आपके सपने काफी हद तक पूरे होंगे। स्वयं को साबित करने के लिए बेहतर दिन है। परिवार में सामंजस्य से शांति का माहौल रहेगा।

मीन राशि: आज का समय आपके लिए अच्छा है। परिवारिक समस्या हल होगी और रुके काम में गति आएगी। सकारात्मक लोगों की सलाह फायदेमंद होगी। मेहनत का उचित फल जल्द मिलेगा। अफवाहों पर ध्यान न दें। ऑफिसियल यात्रा संभव है, जो शुभ होगी। जीवनसाथी के साथ डिनर प्लान करेंगे। छात्रों के लिए सफलता का दिन साबित होगा, बस थोड़ी और मेहनत करें।

309 प्रसारः-9931408109 ईमेलः-bordernewsmirror@
H. 2022/2023

निवास, राजाबाजार-कच्छरा रोड, मातहारा, बिहार-845401 से प्रकाशित व प्रकाश प्रेस मातहारा से मुद्रित, सपादक-सागर सूरज* फोन नं.9470050309 प्रसार:-99314
*ईमेल ID : sooraj@soorajgroup.com (*सूरजसारी अधिकारी के नाम सार्वत्र के नाम के रूप में) BNL N. BHPBH /2022/28070

मुंबई की फिल्म सिटी बनेगी वर्ल्ड-क्लास, मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने किया गादा

मुंबई में चल रहे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन फिल्म में बॉलीवुड एक्टर अक्षय कुमार और मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को साथ देखा गया। इस दौरान मध्य से एकटर ने सीएम से कई सवाल पूछे और सीएम ने सवालों का जवाब देते हुए फिल्म नायक का किससा भी शेयर किया। इसके अलावा, एकटर ने मुंबई के विकास और फिल्म सिटी के विकास पर भी सवाल पूछे, और सीएम फडणवीस ने गोरेंगांव को वर्ल्ड-क्लास बनाने की बात कही। कार्यक्रम में अक्षय कुमार ने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से पूछा कि बॉम्ब का विकास हो चुका है, लेकिन हमारी फिल्म सिटी गोरेंगांव पर आपकी दृष्टि कब पड़ेगी? इस सवाल का जवाब देते हुए सीएम ने कहा कि मेरी बहुत इच्छा थी फिल्म इंडस्ट्री के इंटरनेशनल फिल्म इकोसिस्टम को बदलूँ, इसके बारे में इंडस्ट्री के बड़े लोगों से बात भी हुई, लेकिन किन्हीं कारणों से हो नहीं पाया, लेकिन अब मैंने ठान लिया है कि मुंबई की फिल्म सिटी को वर्ल्ड-क्लास बनाएं। उन्होंने आगे कहा, यहां आईआरसीटीसी सहित कई बड़े स्टूडियो आगे वाले हैं। अब फिल्म में किंग का पूरा तरीका बदल चुका है जीवीएफएस, एडिटिंग, प्रोडक्शन और वर्क्सल लोकेशन्स का दौर है। हमें उसी हिसाब से एक अत्याधिक फिल्म सिटी तैयार करनी होगी। सीएम ने आगे कहा, अगले चार सालों में इस पूरे एरिया को ट्रांसफॉर्म किया जाएगा, ताकि मुंबई की फिल्म सिटी भी दुनिया की प्रमुख फिल्म सिटीज की तरह एक आईकॉनिक डेस्टिनेशन बने। इसी के साथ मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने खुलासा किया कि कैसे अनिल कपूर की फिल्म नायक उनके लिए मुश्किल बन गई। कार्यक्रम में किस्सा शेयर कर सीएम ने कहा कि फिल्म नायक के बाद मुझे बहुत परेशानी हुई क्योंकि उस फिल्म में अनिल कपूर एक दिन के लिए सीएम बनते हैं और दुनिया को बदल देते हैं जैसों गुझासे उम्मीद करते हैं कि मैंने ऐसा क्यों नहीं किया, जैसा अनिल कपूर ने कर दिया। सीएम ने आगे कहा कि जनता अनिल कपूर को नायक और मुझे नालायक समझने लीजाएंगे मैं अपनी पूरी कठिनी कर रहा हूं कि सभी उद्देश्य पूरे हों। इसके अलावा कार्यक्रम में अक्षय कुमार ने सीएम फडणवीस से पुलिस के जूते बदलने की भी अपील की। उन्होंने कहा कि पुलिस के जूतों की एडी बड़ी होती है, जिससे चलने और दौड़ने में परेशानी होती है। वहीं एकटर ने अपनी अपक्रिया फिल्म हैवान के बारे में भी बताया जिसमें वो विगेटिव रोल कर रहे हैं।



दिलबर की आँखों का सॉन्ग पर परफॉर्म करना बेहद रोमांचक अनुभव रहा नोरा फतेही ने थामा के सबसे बड़े पार्टी एंथम में बिख्वेटा जलवा

इसमें कोई शक नहीं कि जब गलोबल स्टार नोरा फतेही स्क्रीन पर आती हैं, तो हर फ्रेम में धमाका होता है। आने वाली फिल्म थामा के गाने दिलबर की आँखों का के साथ, नोरा एक बार फिर दर्शकों को मंत्रमुद्ध कर रही है, एक ऐसा प्रदर्शन जो और सिनेमाई आकर्षण है। नोरा की दमदार मौजूदगी, बोड़े एक्सप्रेशन्स और तेजतर्र रोमांचक हर पल को पावर और जलैमर से भर देती है। यह सिर्फ एक और गाना नहीं है — यह नोरा फतेही का जलवा है, जो एक बार फिर यह साथित करता है कि क्यों वह आज भी बॉलीवुड की सबसे एनर्जेटिक और आकर्षक परफॉर्मर बनी हुई है। पिछली बार जब नोरा ने अंतीम के कमरिया में गाने से स्क्रीन पर धूम मचाई थी, तो इस गाने ने 43 करोड़ से ज्यादा व्यूज के साथ गलोबल चार्ट्स पर छा गया और बॉलीवुड डांस एंथम्स के लिए एक नया बोमार्क बहुत ही एक्साइटिंग बना दिया। अब 'दिलबर' की



आँखों का के साथ वह उस मुकाम को और ऊपर उठा दिया है — यह नोरा फतेही का जलवा है, जो एक बार फिर यह साथित करता है कि क्यों वह आज भी बॉलीवुड की सबसे एनर्जेटिक और आकर्षक परफॉर्मर बनी हुई है। पिछली बार जब नोरा ने अंतीम के कमरिया में गाने से स्क्रीन पर धूम मचाई थी, तो इस गाने ने 43 करोड़ से ज्यादा व्यूज के साथ गलोबल चार्ट्स पर छा गया और बॉलीवुड डांस एंथम्स के लिए एक नया बोमार्क बना दिया। अब 'दिलबर' की

यह गाना पूरी तरह से धमाकेदार है और हाई-एनर्जी परफॉर्मेंस व आइकॉनिक बॉलीवुड जलैमर का सिलसिला आगे बढ़ाता है - वही जोश जिसे दर्शक हमेशा सबसे बड़ा डांस ट्रैक माना जा रहा है। इस अनुभव के बारे में बात करते हुए, नोरा फतेही ने कहा, दिलबर की आँखों का पर परफॉर्म करना मेरे लिए बेहद रोमांचक था। हर बाट को महसूस करना और यह जाना कि ऑडियंस भी साथ में धिरकर चाहे थे। हर बाट को महसूस करना और यह जाना कि ऑडियंस का सहज कोरियोग्राफी, शानदार सेट कर दिया। अब 'दिलबर' की

ट्रीटमेंट जो हर फ्रेम को बोल्ड, ज्लैमर से इलेक्ट्रिकाइंग बना देती है। सोशल मीडिया पर नोरा के शानदार अभिनय की प्रशंसा और फैस नोरा की तारीफों के पुल बांध रहे हैं, एक बात फिर से साफ हो गई है: नोरा फतेही जैसा स्क्रीन पर कोई और प्रभावशाली नहीं है।



शमिता शेट्टी ने सप्तशृंगी देवी, शिर्डी और त्यंबकेश्वर में बिताए दो दिन, माँगा दित्य आशीर्वाद



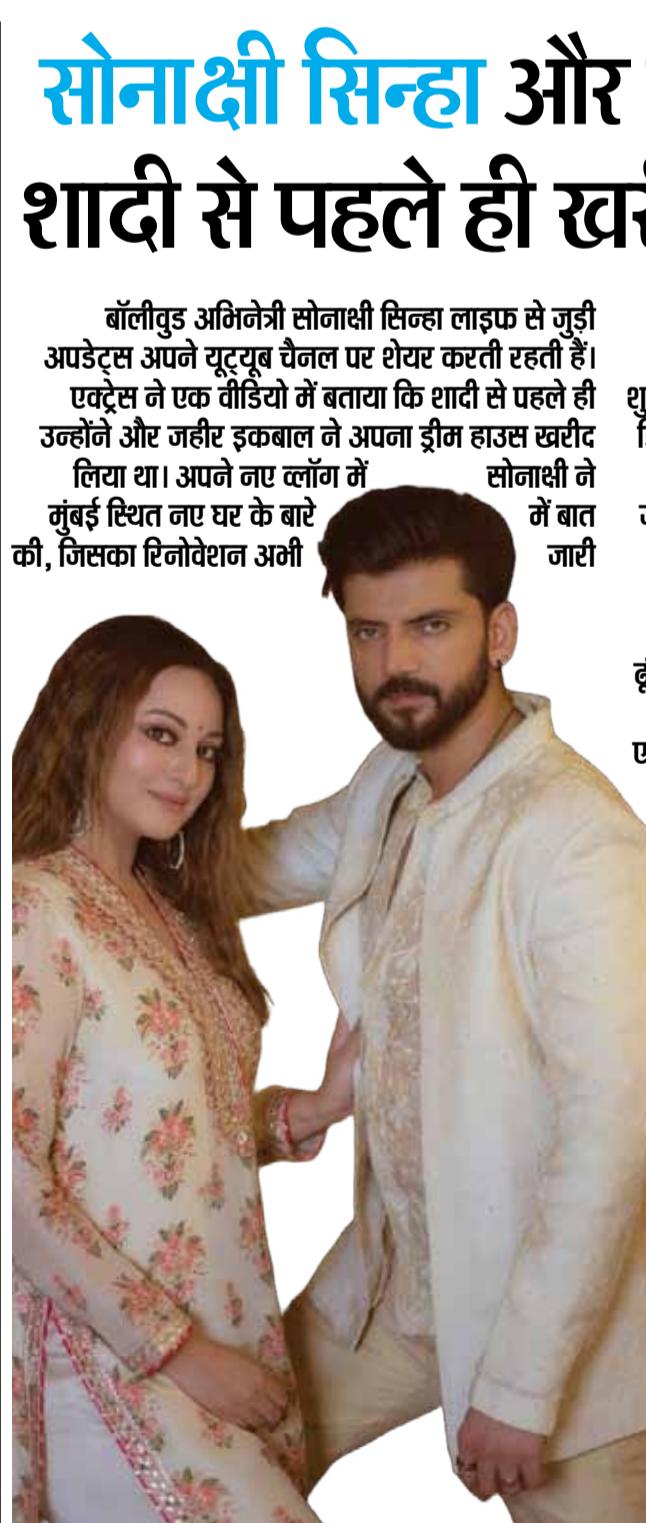
अभिनेत्री शमिता शेट्टी अपनी बहन शिल्पा शेट्टी के साथ एक आध्यात्मिक यात्रा पर निकली हैं, जहां उन्होंने महाराष्ट्र के प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों सप्तशृंगी देवी मंदिर, शिर्डी और त्यंबकेश्वर में भव्य दर्शन करते हुए दिव्य आशीर्वाद मांगा। भगवा साड़ी में सजी शमिता ने अपनी साड़ी और भवित से सबका ध्यान सीधा, जब उन्होंने श्रद्धा भाव से पूजा-अर्चना की। शमिता ने अपनी इस यात्रा की तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा करते हुए कैश्या, सप्तशृंगी देवी मंदिर, शिर्डी और त्यंबकेश्वर की यात्रा में बिताए गए दो खूबसूरत दिन। नाशिक के पास स्थित सप्तशृंगी देवी मंदिर में दोनों बहनों ने देवी मां के दर्शन कर आशीर्वाद लिया। इसके बाद शमिता शिर्डी पहुंची, जहां उन्होंने साई बाबा के दरबार में माथा टेका। उन्होंने अपनी इस धार्मिक यात्रा का समाप्त त्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन के साथ किया, जो भारत के बाहर पवित्र ज्योतिर्लिंगों में से एक है। अपनी इस आध्यात्मिक यात्रा की डालकियाँ साझा करते हुए शमिता के दर्शने पर शांति और कृतज्ञता साफ़ झालकर रही थी। पर्दे पर और उसके बाहर अपनी गरिमा और सौम्यता के लिए जानी जानी वाली शमिता की यह भवित्व-यात्रा आस्था और प्रसिद्धि के बीच संतुलन का एक खूबसूरत उदाहरण पेश करती है।

कृति शेट्टी ने लेटेस्ट गाने अब्दी-अब्दी के लिए सीखा बेली डांस



अभिनेत्री कृति शेट्टी बहुत जल्द दक्षिण भारतीय फिल्मों के अभिनेता के साथ फिल्म जीनी में दिखाई देंगी। इसका गाना अब्दी अब्दी बहुत जल्द रिलीज होगा। इस गाने के लिए खासतौर पर उन्होंने बेली डांस सीखा। कृति शेट्टी ने बताया कि इस गाने की तैयारी के लिए उन्हें अपने बिंदी शेड्यूल से वक्त निकालना काफी मुश्किल रहा, फिर भी वह इसकी प्रैक्टिस के लिए जाती थीं। इस गाने में कल्याणी भी हैं, दोनों फिल्म में मुख्य भूमिका निभा रही हैं। गाने के रिलीज होने से पहले इनका बेली डांस करते हुए एक वीडियो हाल ही में सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। इस गाने के बारे में बात करते हुए कृति ने कहा, जब मुझे फिल्म में बेली डांस के बारे में पता चला, तो मैं बेहत खुश हुई, क्योंकि विचार किया गया था कि हम जानते हैं, जीनी एक मध्य पूर्व का विचार है।

कृति कहानियों में देखा गया है। इसलिए फिल्म में बेली डांस का होना पूरी तरह से फिट बैठता है। यह मुझे बेली डांस की दुनिया तक ले गया, और मैं व्यक्तिगत रूप से बहुत उत्साहित थी, क्योंकि मुझे डांस करना पसंद है और इसने मुझे एक नया डांस पॉर्म सीखने का शानदार मौका दिया। उन्होंने बताया, मेरे लिए यह सीखना थोड़ा मुश्किल हो गया क्योंकि मैं चेहरे में अपनी तीन तमिल फिल्मों की लगातार शूटिंग कर रही थी। मुझे अभ्यास करने का मौका केवल तभी मिलता था जब मैं मुंबई वापस आती थी और डांस क्लासेज में जाकर इसे सीखती थी। मैं वास्तव में वहां कुछ घंटे बिताती थीं और इसकी काफी समय लगता था। खैर, मुझे नई चीजें सीखना बहुत परांद है। यह मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से बहुत मजेदार था। कृति ने यह भी बताया कि बेली डांस सीखना कोई आसान काम नहीं था, लेकिन पूरी लगन के साथ इसकी तैयारी में उन्होंने खुद को झाँक दिया। इस दौरान कमर को एक विशेष प्रकार से मूव करना साथसे कठिन रहा। बताया जा रहा है कि इस गाने में बेमिसाल कोरियोग्राफी, शानदार दृश्य और एक आकर्षक धूम है।



बॉलीवुड अभिनेत्री शमिता शेट्टी अपनी बहन शिल्पा शेट्टी के साथ एक आध्यात्मिक यात्रा पर निकली हैं, जहां उन्होंने महाराष्ट्र के प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों सप्तशृंगी देवी मंदिर, शिर्डी और त्यंबकेश्वर में भव्य दर्शन करते हुए दिव्य आशीर्वाद मांगा। भगवा साड़ी में सजी शमिता ने अपनी साड़ी और भवित से सबका ध्यान सीधा, जब उन्होंने श्रद्धा भाव से पूजा-अर्चना की। शमिता ने अपनी इस यात्रा की तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा करते हुए शमिता के दर्शन करते हुए शांति और कृतज्ञता साफ़ झालकर रही थी। पर्दे पर और उसके बाहर अपनी गरिमा और सौम्यता के लिए जानी जानी वाली शमिता की यह भवित्व-यात्रा आस्था और प्रसिद्धि के ब

DU's tentative exam schedule sparks outrage among teachers over overlapping classes, exams

AGENCIES

New Delhi: Delhi University's newly released tentative date sheet for semester exams has drawn sharp criticism from teachers, who have flagged major scheduling overlaps that could disrupt both teaching and examinations. According to the date sheet hosted on the university's examination portal, semester exams for undergraduate programmes will begin on December 10, 2025, and continue till January 30, 2026. However, classes for the even semester are scheduled to commence on January 2, resulting in a month-long overlap between ongoing exams and new semester classes. The Delhi University Teachers' Front (DTF) and several Academic Council



members have said the overlap will make it impossible to manage both teaching and examination duties simultaneously. "This is a matter of great concern, there will be a massive overlap of one month of both regular classes and exams in January 2026," said Mithuraj Dhusiya, member of DU's Academic Council. "While in the

recent past, DU attributed such overlap to a staggered academic calendar, what has happened now when there is no staggered academic calendar? How can students appear in exams as well as attend classes simultaneously for a whole month?" He further questioned the feasibility of running offline classes while exams are underway.

Former PM Deve Gowda discharged from hospital, advised rest



AGENCIES

Bengaluru: Former Prime Minister and JD(S) Rajya Sabha member H.D. Deve Gowda was discharged from the hospital in Bengaluru on Monday after recovering from an illness. He was treated at the hospital for eight days for fever and a urinary infection. Deve Gowda reached his residence in Padmanabhanagar in Bengaluru after the discharge. The hospital sources stated that he has been advised to rest for 10 to 15 days and stay away from the crowd. Deve Gowda was admitted to Manipal Hospital at Old Airport Road in Bengaluru following a deterioration in his health. He was shifted to the hospital on Monday night after developing symptoms of chills, fever, and a urinary infection. The health bulletin by the Manipal Hospital then stated, "Honourable Prime Minister Deve Gowda was hospitalised with an infection. He is currently undergoing medical management for the same, and his progress is being monitored by a team of medical experts." The 92-year-old JD(S) Rajya Sabha member remains active in politics despite his age and has recently asserted that he will ensure the BJP-JD(S) alliance comes to power in Karnataka. Family sources said that Deve Gowda has been experiencing age-related ailments and had recently undertaken a tour of his native Hassan district. He had also met with the families of the eight victims who were killed during a Ganesh immersion procession after being mowed down by a truck. Hospital authorities stated that Deve Gowda is responding well to treatment and is steadily improving. Former Chief Minister B.S. Yediyurappa and his son, BJP State President B.Y. Vijayendra, Union Minister for Food, Public Distribution and Consumer Affairs Pralhad Joshi, former CM and BJP MP Basavaraj Bommai and other dignitaries visited him at the hospital.

Whosoever tried to ban RSS has been destroyed:

BJP's Praveen Khandelwal slams Priyank Kharge

AGENCIES

New Delhi: Reacting to Karnataka Minister Priyank Kharge's demand to ban Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) activities on government premises, BJP MP Praveen Khandelwal on Monday said that anyone who has tried to ban the RSS has faced complete destruction. This response comes after Kharge wrote a letter to Karnataka Chief Minister Siddaramaiah on October 4, urging a ban on RSS shakhas being conducted in government and government-aided schools and public grounds. In his letter, Kharge alleged that these shakhas promote slogans and ideologies that instill negative thoughts in the minds of children and youth, and that such activities go against India's unity and the spirit of the Constitution. Speaking to the news agency, Praveen Khandelwal said, "Whoever tried to ban the RSS has been completely destroyed. This shows how low the Congress has stooped. The destruction of Congress is now certain. RSS is the world's largest social service organisation. No one can stop its growth." Separately, reacting to social media remarks by



Former Bihar Chief Minister and HAM President, Jitan Ram Manjhi and Rashtriya Lok Morcha (RLM) National President Upendra Kushwaha regarding the NDA's seat-sharing arrangement for the upcoming Bihar Assembly elections, Khandelwal dismissed any controversy. "There is nothing to it. These are just media speculations. Under the leadership of Prime Minister Narendra Modi, the NDA is united and will contest the Bihar elections with full strength. We will form the government with a decisive majority," he said. Jitan Ram Manjhi also expressed satisfaction over the seat-sharing deal.



Tamil Nadu: PMK leader Ramadoss urges caution on removing caste-based place names

AGENCIES

Chennai: Pattali Makkal Katchi (PMK) founder Dr S. Ramadoss has urged the Tamil Nadu government not to rush into removing caste-linked names of places from streets, villages, tanks, and other public places, warning that such moves could erode the state's social identity and create unnecessary discord among communities. In a statement posted online, Ramadoss said the government's recent order to delete caste-related names that have been in use for decades has sparked controversy across the state. He pointed out that several localities and institutions were named after individuals who made significant contributions



to public welfare, education, and community development -- often donating vast tracts of land or supporting social causes. "These names were given by local people to honour their forefathers who played a vital role in developing the area. Similarly, many freedom

fighters and social reformers who fought for the nation, language, and people were remembered by naming places after them -- sometimes including their caste identifiers," Ramadoss said.

He argued that in many places, such names reflected the collective identity of communities that had lived together peacefully for generations. "By removing these caste-linked names, the government is erasing the historical and cultural identity of entire groups. This goes against Tamil Nadu's tradition of social harmony," he warned, adding that the move seemed like an attempt to erase the sacrifices and memory of the state's forebears.

Amit Shah inaugurates, lays foundation stone of development works worth Rs 9,315 crore in Rajasthan

AGENCIES

Jaipur: Union Home Minister Amit Shah arrived in Jaipur on Monday, marking his third visit to Rajasthan in the last three months. During his visit, he launched and laid the foundation stone of development works worth Rs 9,315 crore in Rajasthan, and also inaugurated a state-level exhibition on three new criminal laws at the Jaipur Exhibition and Convention Centre (JECC).

The exhibition commemorates the upcoming implementation of the Bharatiya Nyaya Sanhita, Bharatiya Nagarik Suraksha Sanhita, and Bharatiya Sakshya Adhiniyam, which



came into force on July 1, 2024. Rajasthan Chief Minister Bhajanlal Sharma, Deputy Chief Ministers Diya Kumari and Premchand Bairwa, and several cabinet ministers attended the event. HM Shah also flagged off a Forensic Science Lab (FSL) van, patrol scooters, and bikes dedicated to enhancing women's safety. Highlighting the government's commitment to modern policing, Shah inaugurated a technology-based session on enhancing law enforcement through digital tools.

In Joint Op, BSF seizes Yaba tablets worth Rs 16 crores in Tripura

AGENCIES

Agartala: Border Security Force (BSF) in a joint operation with the Narcotics Control Bureau (NCB) seized a huge quantity of Yaba tablets and detained one individual from the bordering area of Boxanagar under Sepahijala District in Tripura on Sunday night, a press release said.

The joint operation, conducted by BSF troops along with NCB Agartala on the intervening night of October 12th and 13th, led to the recovery of 16 packets wrapped in brown tape, suspected to contain Yaba tablets. The packets were found buried inside the kitchen area.

Upon opening, the packets were found to contain approximately 16 kilograms of Yaba tablets (around 1,60,000 tablets) with an estimated market value of Rs 16 crores, the press



release stated.

Based on specific information regarding the stocking of Yaba tablets at the residence of Lipiyara Khatun (33), the wife of Amal Hussain, a resident of Madhya Boxanagar, Police Station Kalamchoura, District Sepahijala, a special joint operation was planned by the BSF, the press release said.

Awadhesh Prasad backs Akhilesh Yadav after he calls Yogi an 'Infiltrator'

AGENCIES

Ayodhya: A day after Samajwadi Party (SP) chief Akhilesh Yadav likened Uttar Pradesh Chief Minister Yogi Adityanath to an "infiltrator", saying he is from Uttarakhand and should be sent back to his home state, SP MP Awadhesh Prasad on Monday backed his party leader, stating that the condition of the state has worsened under Yogi's leadership. Speaking to the news agency, Awadhesh Prasad said: "I agree with whatever Akhilesh Yadav is saying. The condition of Uttar Pradesh has worsened. The reason is that Chief Minister Yogi Adityanath has lost his credibility. The state is no longer under his control."

He further criticised the BJP's governance model, alleging that it has only increased public suffering. "Today, there is a double-engine government - one at the Centre under PM (Narendra) Modi ji's leadership, and another in states like Uttar Pradesh. Wherever they are in power, people's problems have only increased."

Awadhesh Prasad backs Akhilesh Yadav after he calls Yogi an 'Infiltrator'

MP Awadhesh Prasad on Monday backed his party leader, stating that the condition of the state has worsened under Yogi's leadership. Speaking to the news agency, Awadhesh Prasad said: "I agree with whatever Akhilesh Yadav is saying. The condition of Uttar Pradesh has worsened. The reason is that Chief Minister Yogi Adityanath has lost his credibility. The state is no longer under his control."

He further criticised the BJP's governance model, alleging that it has only increased public suffering. "Today, there is a double-engine government - one at the Centre under PM (Narendra) Modi ji's leadership, and another in states like Uttar Pradesh. Wherever they are in power, people's problems have only increased."

Punjab FM Harpal Singh Cheema meets with family of late IPS officer Puran Kumar

AGENCIES

Chandigarh: Punjab Finance Minister Harpal Singh Cheema on Monday met with the family of IPS Y Puran Kumar, who allegedly killed himself after facing harassment from senior officials.

Puran Kumar allegedly shot himself at his residence in Chandigarh on October 7. In the 'final note' he left behind, he accused eight senior cops, including Haryana director general of police Shatrueet Kapur, of "blatant caste-based discrimination, targeted

mental harassment, public humiliation and atrocities." Meanwhile, the six-member Special Investigation Team (SIT), constituted by the Chandigarh Police of "blatant caste-based discrimination, targeted

Government, seeking the documents required for the investigation.

Earlier today, Congress MP Deepender Hooda also met with the family of the IPS officer Y. Puran Kumar.

Government, seeking the documents required for the investigation.

Earlier today, Congress MP Deepender Hooda also met with the family of the IPS officer Y. Puran Kumar.

Sonia Gandhi unveils statue of Virbhadra Singh, six-time Himachal CM popular as 'Raja Saab'



AGENCIES

Shimla: Congress Parliamentary Party Chairperson Sonia Gandhi on Monday unveiled the statue of party stalwart Virbhadra Singh, who was at the helm of the state for a record six times. The statue is set at the Daulat Singh Park on the historic Ridge, and is situated near the statue of Dr Y.S. Parmar, the first chief minister of Himachal Pradesh, as well as other notable figures like Mahatma Gandhi and former prime ministers Indira Gandhi and Atal Bihari Vajpayee. Congress Members of

Parliament Priyanka Gandhi Vadra, Deepender Hooda and Rajeev Shukla, AICC in-charge of party affairs in the state, Rajni Patil, besides Chief Minister Sukhvinder Sukhu, along with state Cabinet colleagues, were present at the ceremony. The statue's unveiling was initially planned on Virbhadra Singh's birth anniversary on June 23, but was postponed due to the pre-occupation of the party's leadership. The invitation for the ceremony was extended by Public Works Minister Vikramaditya Singh, son of the late leader and the Chairman of the

Raja Virbhadra Singh Foundation. The ceremony was attended by thousands of Virbhadra Singh supporters, elected and former MLAs, former ministers and politicians from neighbouring states too. The supporters danced to the tune of Himachali folk songs and music and raised slogans to celebrate the occasion. Congress veteran Virbhadra Singh, who remained at the helm of the state for a record six times, had devoted over 50 years to the common people despite being born in royalty.

The veteran leader passed away early in July 8, 2021, at the age of 87, leaving behind a rich political legacy. Being a charismatic leader, he was known for having no qualms about folding his hands and bowing before the commoners to seek votes for the party -- be it in the Assembly polls, parliamentary elections or even for the civic body polls. A nine-time legislator and five-time MP, Virbhadra Singh, who had first entered the Lok Sabha in 1962, was often quoted as saying: "I am a grassroots worker. I have risen from the ground, and my roots are still firmly stuck here (in Himachal Pradesh)."

